श्री कृष्ण गीतावली

बाल लीला (राग बिलावल)

(माता) लै उछंग गोबिंद मुख बार-बार निरखैं। पुलकित तनु आनँदघन छन मन हरषै।1।।

पूछत तोतरात बात मातहि जदुराई। अतिसय सुख जाते तोहि मोहि कहु समुझाई।2।

देखत तुव बदन कमल मन अनंद होई। कहै कौन रसन मौन जानै कोइ कोई।3।

सुंदर मुख मोहि देखाउ इच्छा अति मोरे। मम समान पुन्य पुंज बालक नहिं तोरे।4।

तुलसी प्रभु प्रेम बिबस मनुज रूपधारी। बालकेलि लीला रस ब्रज जन हितकारी।5।

बाल लीला (राग ललित)

‘ छोटी मोटी मीसी रोटी चिकनी चुपरि कै तू,

दै री, मैया! “लै कन्हैया! “ सो कब?” अबहिं तात।।’

‘सिगरियै हौंहीं खैहों, बलदाऊ को न दैहौं।।’

‘ सो क्यों?’ ‘भटू, तेरेा कहा’ कहि इत उतजात।1।

बाल बोलि डहकि बिरावत, चरित लखि,

गोपि गन महरि मुदित पुलकित गात।

नूपुर की धुनि किंकिनि को कलरव सुनि,

कूदि कूदि किलकि ठाढ़े ठाढ़े खात।2।

तनियाँ ललित कटि, बिचित्र टेपारो सीस,

मुनि मन हरत बचन कहै तोतरात।

तुलसी निरखि हरषत बरषत फूल,

भूरिभागी ब्रजबासी बिबुध सिद्ध सिहात।3।

गोपी उपालंभ (रास आसावरी)

तेहि स्याम की सपथ जसोदा! आइ देखु गृह मेरें।

जैसी हाल करी यहि ढोटा छोटे निपट अनेरें।1।

गोरस हानि सहौं , न कहौं कछु, यहि ब्रजबास बसेरें।

दिन प्रति भाजन कौन बेसाहै? धर निधि काहू केरें।।2।

किएँ निहोरो हँसत, खिझे तें डाँटत नयन तरेरें।

अबहीं तें ये सिखे कहाँ धौं चरित ललित सुत तेरें ।3।

बैठो सकुचि साधु भयो चाहत मातु बदन तन हेरें।

तुलसिदास प्रभु कहौं ते बातैं जे कहि भजे सबेरें।4।

(2)

मेा कहँ झूठेहु दोष लगावहिं।

मैया! इन्हहि बानि पर घर की, नाना जुगुति बनावहिं।1।

इन्ह के लिएँ खेलिबो छाँड्यो, तऊ न उबरन पावहिं।

भाजन फोरि, बोरि कर गोरस, देन उरहनो आवहिं।2।

कबहुँक बाल रोवाइ पानि गहि, मिस करि उठि-उठि धावहिं।

करहिं आपु, सिर धरहिं आन के, बचन बिरंचि हरावहिं।3।

मेरी टेव बूझि हलधर सों, संतत संग खेलावहिं।

जे अन्याउ करहिं काहू को, ते सिसु मोहि न भावहिं।4।

सुनि सुनि बचन चातुरी ग्वालिनि हँसि हँसि बदन दुरावहिं।

बाल गोपाल केलि कल कीरति तुलसिदास मुनि गावहि।5।

गोपी उपालंभ (रास आसावरी-1)

कबहुँ न जात पराए धामहिं।

खेलत ही देखौं निज आँगन सदा सहित बलरामहिं।1।

मेरे कहाँ थाकु गोरस केा, नव निधि मन्दिर या महिं।

ठाढ़ी ग्वालि ओराहना के मिस आइ बकहिं बेकामहिं।2।

हौं बलि जाउँ जाहु कितहूँ जनि, मातु सिखावति स्यामहिं।

बिनु कारन हठि दोष लगावति तात गएँ गृह ता महिं।3।

हरि मुख निरखि , परूष बानी सुनि, अधिक -अधिक अभिरामहिं।

तुलसिदास प्रभु देख्योइ चाहति श्रीउर ललित ललामहिं।4।

अब सब साँची कान्ह तिहारी।

जो हम तजे, पाइ गौं मोहन गृह आए दै गारी।1।

सुसुकि सभीत सकुचि रूखे मुख बातें सकल सँवारी।

साधु जानि हँसि हृदय लगाए, परम प्रीति महतारी।2।

कोटि जतन करि सपथ कहैं हम, मानै कौन हमारी।

तुमहिं बिलोकि, आन को ऐसी क्यों कहिहैं बर नारी। 3।

जैसे हौ तैसे सुखदायक ब्रजनायक बलिहारी।

तुलसिदास प्रभु मुख छबि निरखत मन सब जुगुति बिसारी।4।

गोपी उपालंभ (रास केदारा)

महरि तिहारे पायँ परौं, अपनो ब्रज लीजै।

सहि देख्यो, तुम सेां कह्यो, अब नाकहिं आई, कौन दिनहिं दिन छीजै।।1।।

ग्वालिनि तौ गोरस सुखी, ता बिनु क्यों जीजै।

सुत समेत पाउँ धारि, आपुहि भवन मेरे, देखिये जो न पतीजै।।2।।

अति अनीति नीकी नहीं , अजहूँ सिख दीजै।

तुलसिदास प्रभु सों कहै उर लाइ जसोमति, ऐसी बलि कबहूँ नहिं कीजै।।3।।

अबहि उरहनो दै गई , बहुरौ फिरि आई ।

सुनु मैया! तेरी सौं करौं, याको टेव लरन की, सकुच बेंचि सी खाई।।1।।

या ब्रज में लरिका धने, हौं ही अन्याई ।

मुँह लाएँ मूँडहिं चढ़ी, अंतहुँ अहिरिनि, तू सूधी करि पाई।।2।।

सुनि सुत की अति चातुरी जसुमति मुसुकाई ।

तुलसिदास ग्वालिनि ठगी, आयो न उतरू, कछु, कान्ह ठगौरी लाई।।3।

गोपी उपालंभ (रास गौरी)

अब ब्रज बास महरि किमि कीबो।

दूध दह्यो माखन ढारत हैं, हुतो पोसात दान दिन दीबो।।1।

अब तौ कठिन कान्ह के करतब तुम हौ हँसति कहा कहि लीबो।

लीजै गाउँ, नाउँ लै रावरो, है जग ठाउँ कहूँ ह्वै जीबो।2।

ग्वालि बचन सुनि कहति जसोमति, भलो न भूमि पर बादर छीबो।

दैअहि लागि कहौं तुलसी प्रभु, अजहुँ न तजत पयोधर पीबो।3।

जानी है ग्वालि परी फिरि फीकें।

मातु काज लागी लखि डाटत, है बायनो दियो घर नीकें।।।

अब कहि देउँ, कहति किन, यों कहि, माँगत दही धर्यो जो छीकें।2।

तुलसी प्रभु मुख निरखि रही चकि, रह्यो न सयानप तन मन ती कें।3।

जौलों हौं कान्ह रहौं गुन गोए।

तौलौं तुमहि पत्यात लोग सब, सुसुकि सभीत साँचु सो रोए।1।

उलूखन-बंधन (राग केदार)

हरि को ललित बदन निहारू।

निबटहिं डाँटति निठुर ज्यों लकुट करतें डारू।1।

मंजु अंजन सहित जल कन चवत लोचन चारू।

स्याम सारस मग मनहुँ ससि स्त्रवत सुधा सिंगारू।2।

सुभग उर दधि बुंद सुंदर लखि अपनपौ चारू।

मनहुँ मरकत मृदु सिखर पर लसत बसद तुषारू।3।

कान्हहू पर सतर भौंहि महरि! मनहिं बिचारू।

दास तुलसी रहति क्यों रिस निरखि नंदकुमारू।4।

लेत भरि भरि नीर कान्ह कमल नैन।

फरक अधर डर, निरखि लकुट कर, कहि न सकत कछु बैन।1।

दुसह दाँवरी छोरि, थोरी खोरि, कह कीन्हों,

चीन्हों री सुभाउ तेरो आजु लगे माई मैं न।

तुलसिदास नँद ललन ललित रिस क्यों रहति उर ऐन।2।

इन्द्रकोप-गोवर्धन धारण (राग मलार)

ब्रज पर घन धमंड करि आए।

अति अपमान बिचारि आपनो कोपि सुरेस पठाए।।

दमकति दुसह दसहुँ दिसि दामिनि, भयो तम गगन गँभीर।

गरजत घोर बारिधर धावत प्रेरित प्रबल समीर।2।

बार-बार पबिपात, उपल घन बरषत बूँद बिसाल।

राखहु राम कान्ह यहि अवसर, दुसह दसा भइ आइ।

नंद बिरोध कियो सुरपति सों, सो तुम्हरोइ बल पाइ।4।

सुनि हँसि उठ्यो नंद को नाहरू, लियो कर कुधर उठाइ।

तुलसिदास मघवा अपनी सो करि गयो गर्व गँवाइ।5।

गोचारण अथवा छाक-लीला(राग गौरी)

टेरीं (कान्ह) गोबर्धन चढ़ि गैया।

मथि मथि पियो बारि चारिक मैं, भूख न जाति अधाति न घैया।1।

सैल सिखर चढ़ि चितै चकित चित, अति हित बचन कह्यो बल भैया।

बाँधि लकुट पट फेरि बोलाईं, सुनि कल बेनु धेनु धुकि धैया।2।

बलदाऊ! देखियत दूरि तें,आवति छाक पठाई मेरी मैया।

किलकि सखा सब नचत मोर ज्यों , कूदत कपि कुरंग की नैया।3।

खेलत खात परसपर डहकत, छीनत कहत करत रोग दैया।

तुलसी बालकेलि सुख निरखत, बरषत सुमन सहित सुर सैया।4।

यमुना तट पर बंशी वादन(राग नट) गावत गोपाल लाल नीकें राग नट हैं।

चलि री आलि देखन, लोयन लाहु पेखन, ठाढ़े सुरतरू तर तटिनी के तट हैं।1।

मोरचंदा चारू सिर, मंजु गुंजा पुंज धरें, बनि बनधातु तन ओढ़े पीत पट हैं।

मुरली तान तरँग, मोहे कुरँग बिहँग, जोहैं मुरति त्रिभंग निपट निकट हैं।2।

अंबर अमर हरषत बरषत फूल, स्नेह सिथिल गोप गाइन के ठट हैं।

तुलसी प्रभु निहारि जहाँ तहाँ ब्रज नारि, ठगी ठाढ़ी मग लिएँ रीते भरे घट हैं।3।

शोभा-वर्णन (राग बिलावल)

देखु सखी हरि बदन इंदु पर।

चिक्कन कुटिल अलक-अवली -छबि, कहि न जाइ सोभा अनूप बर।1।

बाल भुअंगिनि निकर मनहुँ मिलि रही घेरि रस जानि सुधाकर।

तजि न सकहिं , नहिं करहिं पान, कहु, कारन कौन बिचारि डरहिं डर।2।

अरून बनज लोचन कपोल सुभ, स्त्रुति मंडित कुंडल अति सुंदरं ।

मनहुँ सिंधु निज सुतहिं मनावन, पठए जुगुल बसीठ बारिचर।3।

नंदनँदन मुख की सुंदरता, कहि न सकत स्त्रुति सेष उमाबर।

तुलसिदास त्रैलोक्यबिमोहन, रूप कपट नर त्रिबिध सूल हर।4।

आजु उनीदे आए मुरारी।

आलसवंत सुभग लोचन सखि! छिन मूदत छिन देत उधारी।1।

मनहुँ इंदु पर खंजरीट द्वै, कछुक अरून बिधि रचे सँवारी।

कुटिल अलक जनु मार फंद कर, गहे सजग ह्वै रह्यो सँभारी।2।

मनहूँ उड़न चाहत अति चंचल, पलक पंख छिन देत पसारी।

नासिक कीर, बचन पिक, सुनि करि, संगति मनु गुनि रहत बिचारी।3।

रूचिर कपोल, चारू ,कुंडल बर, भ्रूकुटि सरासन की अनुहारी।

परम चपल तेहि त्रास मनहुँ खग प्रगटत दुरत न मानत हारी।4।

जदुपति मुख छबि कलप कोटि लगि कहि न जाइ जाकें मुख चारी।

तुलसिदास जेहि निरखि ग्वालिनी भजीं तात पति तनय बिसारी।5।

शोभा-वर्णन (राग गौरी)

गोपाल गोकुल बल्लवी प्रिय गोप गोसुत बल्लभं।

चरनारबिंदमहं भजे भजनीय सुर मुनि दुर्लभं।1।

घनश्याम काम अनेक छबि, लोकाभिराम मनोहरं।

किंजल्क बसन, किसोर मूरति भूरि गुन करूनाकरं।2।

सिर केकि पच्छ बिलोक कुंडल, अरून बनरूह लोचनं।

गुंजावसंत बिचित्र सब अँग धातु, भव भय मोचनं।3।

कच कुटिल, सुंदर तिलक भ्रू , राका मयंक समाननं।

अपहरन तुलसीदास त्रास बिहार बृंदाकाननं।4।

गोपी उपालंभ (रास गौरी -1)

(1)

भूलि न जात हौं काहू के काऊ।

साखि सखा सब सुबल सुदामा, देखि धौं बूझि, बोलि बलदाऊ।1।

यह तो मोहि खिझाइ कोटि बिधि, उलटि बिबादन आइ अगाऊ।

यहि कहा मैया मुँह लावति, रागति कि ए लंगरि झगराऊ।2।

कहत परसपर बचन, जसोमति , लखि नहिं सकति कपट सति भाऊ।

तुलसिदास ग्वालिनि अति नागरि, नट नागर मनि नंद ललाऊ।3।

(2)

छाँडो मेरे ललन! ल्लित लरिकाई।

ऐहैं सुत! देखुवार कालि तेरे, बबै ब्याह की बात चलाई।1।

डरिहैं सासु ससुर चोरी सुनि, हँसिहैं नइ दुलहिया सुहाई।

उबटौं न्हाहु, गुहौं चुटिया बलि, देखि भलो बर करिहिं बड़ाई।2।

मातु कह्यो करि कहत बोलि दै, 'भइ बड़ि बार, कालि तौ न आई'।

'जब सोइबो तात ' यों 'हाँ' कहि, नयन मीचि रहे पौढ़ि कन्हाई।3।

उठि कह्यो, भोर भयो, झँगुली दै, मुदित महरि लखि आतुरताई।

बिहँसी ग्वालि जानि तुलसी प्रभु, सकुचि लगे जननी उर धाई।4।

जौलों हौं कान्ह रहौं गुन गोए।

तौलौं तुमहि पत्यात लोग सब, सुसुकि सभीत साँचु सो रोए।1।

हौं भले नँग-फँग परे गढ़ीबे, अब ए गढ़त महरि मुख जोएँ।

चुपकि न रहत, कह्यौ कछु चाहत, ह्वैहै कीच कोठिला धोएँ।2।

गरजति कहा तरजिनिन्ह नरजति, बरजत सैन नैन के कोए।

तुलसी मुदित मातु सुत गति लखि, विथकी है ग्वालि मैन मन मोए।3।

उलूखन-बंधन-1 (राग केदार)

हा हा री महरि! बरो , कहा रिस बस भई, कोखि के जाए सों रोषु केतो बड़ो कियो है।

ढीली करि दाँवरी, बावरी! सँ०वरेहि देखि, सकुचि सहमि सिसु भारी भय भियो है।1।

दूध दधि माखन भेा, लाखन गोधन धन, जब ते जनम हलधर हरि लियो है।

खायो , कै खवायो, कै बिगार्यो , ढार्यो लरिका री, ऐसे सुत पर कोह, कैसो तेरो हियो है?।2।

मुनि कहैं सुकृती न नंद जसुमति सम, न भयो, न भावी, नहीं विद्यमान बियो है।

कौन जानै कौनें तप, कौनें जोग जाग जप, कान्ह सो सुवन तोको महादेव दियो है।3।

इन्हही के आए ते बधाए ब्रज नित नए, नादत बाढ़त सब सब सुख जियो है।

नंदलाल बाल जस संत सुर सरबस , गाइ सो अमिय रस तुलसिहुँ पियो है।4।

(17)

ललित लालन निहारि, महरि मन बिचारि, डारि दै घरबसी लकुटी बेगि कर तें।1।

कह्यो मेरो मानि, हित जानि, तू सयानी बड़ी, बड़े भाग पायो पूत बिधि हरि हर तें।

ताहि बाँधिबे को धाई, ग्वालिन गोरस बहाई, लै लै आईं बावरी दाँवरी घर-घर तें।2।

कुलगंरू तिय के बचन कमनीय सुनि, सुधि भए बचन जे सुने मुनिबर तें।

छोरि, लिए लाइ उर, बरषैं सुमन सुर , मंगल है तिहूँ पुर हरि हलधर तें।3।

आनँद बधावनो मुदित गोप-गोपीगन , आजु परी कुसल कठिन करवर तें।

तुलसी जे तोरे तरू, किए देव दियो बरू, कै न लह्यो कौन फरू देव बरू, देव दामोदर तें।4।

गोपी बिरह(राग बिलावल)

बिछुरत श्रीब्रजराज आजु, इन नयनन की परतीति गई।

उड़ि न लगे हरि संग सहज तजि, ह्वै न गए सखि स्याममई।1।

रूप रसिक लालची कहावत, सो करनी कछु तौ न भई।

साचेहूँ कूर कुटिल सित मेचक, बृथा मीन छबि छीन लई।2।

अब काहें सोचत मोचत जल, समय गएँ चित सूल नई।

तुलसिदास जड़ भए आपहि तें, जब पलकनि हठि दगा दई।3।

गोपी बिरह(राग कन्हारा) नहिं कछु दोष स्याम को माई।

जो दुख मैं पायों सजनी सुन, सो तौ सबै मन की चतुराई।1।

निज हित लागि तबहिं ए बंचक, सब अंगनि बसि प्रीति बढ़ाई।

लियो जो सब सुख हरि अँग-सँग केा, जहँ जेहि बिधि तहँ सोइ बनाई।2।

अब नँदलाल गवन सुनि मधुबन, तनुहि तजत नहिं बार लगाई।

रूचिर रूप-जल महँ रस सो ह्वै, मिलि, न फिरन की बात चलाई।3।

एहि सरीर बसि सखि वा सठ कहँ, कहि न जाइ जो निधि फिरि पाई।

तदपि कछू उपकार न कीन्हो, निज मिलन्योै तहिं मोहि लिखाई।4।

आपु मिल्यो यहि भाँति जाति तजि, तनु मिलया ेजल पय की नाई।

ह्वै मराल आयो सुफलक सुत, लै गयो छीर नीर बिलगाई।5।

मनहूँ तजी कान्हहूँ त्यागी, प्रानौ चलिहैं परिमिति पाई।

तुलसिदास रीतुहु तन ऊपर, नयननि की ममता अधिकाई।6।

गोपी बिरह(राग धनाश्री-1)

करी है हरि बालक की सी केलि। हरष न रचत,

बिषाद न बिगरत, डगरि चले हँसि खेलि।1।

बई बनाय बारि बृंदाबन प्रीति सँजीवनि बेलि।

सींचि सनेह सुधा, खनि काढ़ी लोक बेद परहेलि।2।

तून ज्यों तजीं, पालि तनु ज्यों हम बिधि बासव बल पेलि।

एतहु पर भावत तुलसी प्रभु गए मोहिनी मेलि।3।

आलि! अब कहुँ जनि नेह निहारि।

समुझें सहें हमारो है हित बिधि बामता बिचारि।1।

सत्य सहें हमारो सोभा सुख सब गुन उदधि अपारि।

देख्यो सुन्यो न कबहुँ काहु कहुँ कहुँ मीन बियोगी बारि।2।

कहियत काकु कूबरीहूँ को, सो कुबानि बस नारि।

बिष ते बिषम बिनय अनहित की , सुधा सनेही गारि।3।

मन फेरियत कुतर्क कोटि करि कुबल भरोसे भारि।

तुलसी जग दूजा न देखियत कान्ह कुँवर अनुहारि।4।

गोपी बिरह(राग धनाश्री-2)

ससि तें सीतल मोकौं लागै माई री! तरनि।

याके उएँ बरति अधिक अँग दव, वाके उएँ मिटति रजनि जनित जरनि।1।

सब बिपरीत भए माधव बिनु, हित जो करत अनहित की करनि।

तुलसीदास स्यामसुंदर-बिरह की , दुसह दसा सो मो पैं परति नहीं बरनि।2।

संतत दुखद सखी! रजनीकर।

स्वारथ रत तब, अबहुँ एकरस, मो केा कबहूँ न भयो तापहर।1।

निज अंसिक सुख लागि चतुर अति, कीन्ही प्रथम निसा सुभ सुंदर।

अब बिनु मन तन दहत, दया करि। राखत रबि ह्वै नयन बारिधर।2।

राख्यो है जलधि गँभीर धीरतर। ताहु ते परम कठिन जान्यो ससि,

तज्यो पिता, तब भयो ब्योमचर।3। सकल बिकार कोस बिरहिनि रिपु,

काहे तें याहि सराहत सुर नर! तुलसिदास त्रैलोक्य मान्य भयो,

कारन इहै,गह्यो गिरिजाबर।4।

गोपी बिरह(राग मलार)

कोउ सखि नई बात सुनि आई।

यह ब्रजभूमि सकल सुरपति सों, मदन मिलिक करि पाई।1।

धन धावन, बग पाँति पटो सिर, बैरख तड़ित सोहाई।

बोलत पिक नकीब, गरजनि मिस, मानहुँ फिरत दोहाई।2।

चातक मोर चकोर मधुप सुक सुमन समीर सहाई

चातक कियो बास बृंदावन, बिधि सों कछु न बसाई।3।

सींव न चाँपि सक्यो कोऊ तब, जब हुते राम कन्हाई।

अब तुलसी गिरिधर बिनु गोकुल कौन करिहिं ठकुराई।4।

गोपी बिरह (राग सोरठ)

ऊधौ! या ब्रज की दसा बिचारौ।

ता पाछे यह सिद्धि आपनी जोग कथा बिस्तारौ।1।

जा कारन पठए तुम माधव , सो सोचहु मन माहीं

केतिक बीच बिरह परमारथ, जानत हैं ा किधौं नाहीं?।2।

परम चतुर निज दास स्याम के, संतत निकट रहत हौं।

जल बूडत अवलंब फेन कौ फिरि -फिरि कहा कहत हौ?।3।

वह अति ललित मनोहर आनन कौने जतन बिसारौं।

जोग जुगुति अरू मुकुति बिबिध बिधि वा मुरली पर वारौं।4।

जेहिं उर बसत स्यामसुंदर घन, तेहिं निर्गुन कस आवै।

तुलसिदास सो भजन बहावौ, जाहि दूसरो भावै।5।

गोपी बिरह(राग बिलावल-1)

सो कहौ मधुप ! जो मोहन कहि पठई।

तुम सकुचत कत? हौंही नीकें जानति, नंदनंदन हो निपट करी सठई।1।

हुतो न साँचो सने ेह, मिट्यो मन को सँदेह हरि परे उघरि, सँदेसहु ठठई।

तुलसिदास कौन आस मिलन की, कहि गये सो तौ कछु एकौ न चित ठई।2।

मेरे जान और कछु न मन गुनिए।

कूबरी रवन कान्ह कही जो मधुप सों, सोई सिख सजनी! सुचित दै सुनिए।1।

काहे को करति रोष, देहि धौं कौन को दोष, निज नयननिको बयो सब लुनिए।

दारू सरीर, कीट पहिले सुख, सुमिर सुमिर बासर निसि धुनिए।2।

ये सनेह सुचि अधिक अधिक रूचि, बरज्यो न करत कितो सिर धुनिए।

तुलसिदास अब नंदसुवन हित बिषम बियोग अनल तनु हुनिए।3।

भली कही , आली, हमहूँ पहिचाने।

हरि निर्गुन , निर्लेप, निरपने, निपट निठुर, निज काज सयाने।1।

ब्रज को बिरह, अरू संग महर को, कुबरिहि बरत न नेकु लजाने।

समुझि सो प्रीति की रीति स्याम की, सोइ बावरि जो परेखो उर आने।2।

सुनत न सिख लालची बिलोचन, एतेेहु पर रूचि रूप लोभाने।

तुलसिदास इहै अधिक कान्ह पहिं, नीकेई लागत मन रहत समाने।3।

गोपी बिरह(राग मलार-1

जौ पै अलि! अंत इहै करिबो हो।

तौ अगनित अहीर अबलनि को हठि न हियो हरिबो हो।1।

जौ प्रपंच करि नाम प्रेम फिरि अनुचित आचरिबो हो।

तौ मथुराहि महामहिमा लहि सकल ढरनि ढरिबो हो।2।

दै कूबरिहि रूप् ब्रज सुधि भएँ लौकिक डर डरिबो हो।

ग्यान बिराग काल कुत करतब हमरेहि सिर धरिबो हो।3।

उन्हहि राग रबि नीरद जल ज्यों प्रभु परिमिति परिबो हो।

हमहुँ निठुर निरूपाधि नीर निधि निज भुजबल तरिबो हो।4।

भलो भयो सब भाँति हमारो, एक बार मरिबो हो।

तुलसी कान्ह बिरह नित नव जरजरि जीवन भरिबो हो।5।

ऊधौ ! यह ह्याँ न कछू कहिबे ही।

ग्यान गिरा कुबरीवन की सुनि बिचारि गहिबे ही।1।

पाइ रजाइ, नाइ सिर, गृह ह्वै गति परमिति लहिबे ही।

मति मटुकी मृगजल भरि घृत हित मन-हीं-मन महिबे ही।2।

गाडे भली, उखारे अनुचित, बनि आएँ बहिबे ही।

तुलसी प्रभुहिं तुमहिं हमहूँ हियँ सासति सी सहिबे ही।5।

गोपी बिरह(राग केदारा)

गोकुल प्रीति नित जानि।

जाइ अनत सुनाइ मधुकर ग्यान गिरा पुरारि।1।

मिलहिं जोगी जरठ तिन्हहि देखाउ निरगुन खानि।

नवल नंदकुमार के ब्रज सगुन सुजस बखानि।2।

तु जो हम आदर्यो, सो तो ब्रज कमल की कानि।

तजहिं तुलसी समुझि यह उपदेसिबे की बानि।3।

काहे को कहत बचन सँवारि।

ग्यानगाहक नाहिनै ब्रज, मधुप! अनत सिधारि।1।

जुगुति धूम बधारिबे की समुझिहैं न गँवारि।

जोगिजन मुनिमंडली मों जाइ रीति ढारि।2।

सुनै तिन्ह की कौन तुलसी, जिन्हहि जीति न हारि।

सकति खारो कियो चाहत मेघहू को बारि।3।

गोपी बिरह(राग गौरी)

सुनत कुलिस सम बचन तिहारे ।

चित दै मधुप! सुनहु सोइ कारन, जाते जात न प्रान हमारे।।

ग्यान कृपान समान लगत उर, बिरहत छिन-छिन होत निनारे।

अवधि जरा जोरति हठि पुनि-पुनि, याते रहत सहत दुख भारे।2।

पावक बिरह, समीर स्वास, तनु तूल, मिले तुम जारनिहारे।

तिन्हहि निदरि अपने हित कारन, राखत नयन निपुन रखवारे।3।

जीवन कठिन , मरन की यह गति, दुसह बिपति ब्रजनाथ निवारे।

तुलसिदास यह दसा जानि जियँ उचित होइ सो कहौ अलि!प्यारे।4।

छपद ! सुनहु बर बचन हमारे।

बिनु ब्रजनाथ ताप नयननि को, कौन हरे , हरि अंतर कारे।1।

कनक कुंभ भरि -भरि पियूष जल, बरषत जलद कलप सत हारे।

कदलि, सीप, चातक को कारज स्वाति बारि बिनु कोउ न सँवारे।2।

सब अँग रूचिर किसोर स्यामधन , जेहिं हृदि जलज बसत हरि प्यारे।

तेहिं उर क्यों समात बिराट बपु स्यों महि सरित सिंधु गिरि भारे।3।

बढ्यो प्रेम अति प्रलय के बर ज्यों बिपुल जोग जल बोरि न पारे।।

तुलसिदास ब्रज बनितनि को ब्रत समरथ को करि जतन निवारे।4।

गोपी बिरह(राग कान्हरा)

हे हम समाचार सब पाए।

अब बिसेष देखे तुम देखे, हैं कूबरी हाँक से लाए।

मथुरा बड़ो नगर नागर जन, जिन्ह जातहिं जदुनाथ पढ़ाए।

समुझि रहनि, सुनि कहनि बिरह ब्रन, अनख अमिय ओषध सरूहाए।2।

मधुकर रसिक सिरोमनि कहियत, कौने यह रस रीति सिखाए।

बिनु आखर को गीत गाइ कै चाहत ग्वालिनि ग्वाल रिझाए।3।

फल पहिले हीं लह्यो ब्रजबासिन्ह, अब साधन उपदेसन आए।

तुलसी अलि अजहुँ नहीं बुझत, कौन हेतु नँदलाल पठाए।4।

कौन सुनै अलि की चतुराई।

अपनिहिं मति बिलास अकास महँ चाहत सियनि चलाई।1।

सरल सुलभ हरि भगति सुखाकर निगम पुराननि गाई।

तजि सोइ सुधा मनोरथ करि करि को मरिहै री, माई।2।

जद्यापि ताको सोइ मारग प्रिय जाहि जहाँ बनि आई।

मैन के दसन कुलिस के मोदक कहत सुनत बौराई।3।

सगुन छीरहीन बसत ब्रज तिहुँ पुर बिदित बड़ाई।

आक दुहन तुम कह्यो, सो परिहरि हम यह मति नहिं पाई।4।

जानत है जदुनाथ सबनि की बुधि बिबेक जड़ताई ।

तुलसिदास जनि बकहिं मधुप सठ! हठ निसि दिन अँवराई।5।

गोपी बिरह(राग धनाश्री-2)

लागियै रहति नयननि आगे तें, न टरति मोहन मूरति।

नील नलिन स्याम, सोभा अगनित काम, पावन हृदय जेहिं फूरति।1।

अमित सारदा सेष नहीं कहि, सकत अंग अँग सूरति।

तुलसिदास बड़े भाग मन लागेहु तें सब सुख पूरति।2।

जब तेे ब्रज तजि गये कन्हाई।

तब ते बिरह रबि उदित एकरस सखि! बिछुरन बृष पाई।1।

घटत न तेज, चलत नाहिन रथ, रह्यो उर नभ पर छाई।

इन्द्रिय रूप रासि सोचहि सुठि, सुधि सब की बिसराई।2।

भया सोक भय कोक कोकनद भ्रम भ्रमरनि सुखदाई।

चित चकोर , मन मोर, कुमुद मुद, सकल बिकल अधिकाई।3।

तनु तड़ाग बल बारि सुखन लाग्यो परि कुरूपता काई।

प्रान मीन दिन दीन दूबरे, दसा दुसह अब आई।4।

तुलसीदास मनोरथ मन मृग मरत जहाँ तहँ धाई।

राम स्याम सावन भादौं बिनु जिय की जरनि न जाई।5।

गोपी बिरह(राग सोरठ-1)

मधुकर! कहहु कहन जो पारौ।

बलि, नाहिन अपराध रावरो, सकुचि साथ जनि मारौ।1।

नहिं तुम ब्रज बसि नन्दलाल को बालबिनोद निहारी।

नाहिन रास रसिक रस चाख्यो, तात डेल सो डारौ।2।

तुलसी जौ न गए प्रीतम सँग प्रान त्यागि तनु न्यारौ।

तौ सुनिबो दखिबो बहुत अब कहा करम सों चारौं।3।

उधौ जू कह्यो तिहारोइ कीबो।

नीकें जिय की जानि अपनपौ समुझि सिखावन दीबौ।।1

स्याम बियोगी ब्रज के लोगनि जोग जो जानौं।

तौं सँकोच परिहरि पा लागौं परमारथ हि बखानौं।2।

गोपी ग्वाल गोसुत सब रहत रूप अनुरागे।

दीन मलीन छीन तनु डोलज मीन मजा सों लागे।3।

तुलसी है सनेह दुखदायक , नहिं जानत ऐसो को है।

तऊ न होत कान्ह को सो मन, सबै साहिबहि सोहै।4।

गोपी बिरह(राग मलार-2)

मधुकर ! कान्ह कही ते न होही।

कै ये नई सीख सिखई हरि निज अनुराग बिछोही।1।

राखी सचि कूबरी पीठ पर ये बातेेें बकुचौहीं।

स्या मसो गाहक पाइ सयानी! खेालि देखाई है गौहीं।2।

नागर मनि सोभा सागर जेहिं जग जुबतीं हँसि मोहीं।

लियो रूप दै ग्यान गाँठरी भलो ठग्यो ठगु ओहीं।3।

है निर्गुन सारी बारिक, बलि घरी करौं , हम जोही।

तुलसी ये नागरिन्ह जोग पट , जिन्हहि आजु सब सोहीं।4।

मधुप! तुम्ह कान्ह ही की कही क्यों न कही है?।

यह बतकही चपल चेरी की निपट चरेरीय रही है।1।

कब ब्रज तज्यो, ग्यान कब उपजो? कब बिदेहता लही है?

गए बिसारि रीति गोकुल की, अब निर्गुन गति गही है।2।

आयसु देहु, करहिं सोइ सिर धरि, प्रीति परमिति निरबही है।

तुलसी परमेश्वर न सहैगो, हम अबलनि सब सही है।3।

गोपी बिरह(राग मलार-3)

दीन्हीं है मधुप सबहि सिख नीकी।

सोइ आदरौ, आस जाके जियँ बारि बिलोवत घी की।1।

बुझी बात कान्ह कुबरी की, मधुकर कछु जनि पूछौ।

बूझी बात कान्ह कुबरी की, मधुकर कछु जनि पूछौ।

ठालीं ग्वालि जानि पठए अलि, कह्यो है पछोरन छूछौ।2।

हमहूँ कछुक लखी ही तब की औरेब नंदलला की।

ये अब लही चतुर चेरी पै चोखी चाल चलाकी।3।

गए कर ते◌े◌ं ,घर तें, आँगन तें, ब्रजहू तें ब्रजनाथ।

तुलसी प्रभु गयो चहत मनहु तें, सो तो है हमारे हाथ।4।

ताकी सिख ब्रज न सुनैगो कोउ भोरें।

जाकी कहनि रहनि अनमिल अलि! सुनत समुझियत थोरें।1।

आपु, कंज मकरंद सुधा हृद हृदय रहत नित बोरें।

हम सों कहत बिरह स्त्रम जैहैं गगन कूप , खनि खोरें ।2।

धान को गाँव पयार तें जानिय ग्यान बिषय मन मोरें।

तुलसी अधिक कहें न रहैं रस, गूलरि को सो फल फोरें।3।

आली! अति अनुचित, उतरू न दीजै।

सेवक सखा सनेही हरि के, जो कछु कहैं सो कीजै।1।

देस काल उपदेस सँदेसो सादर सब सुनि लीजै।

कै समुझिबो, कै ये समुझैहैं, हारेहुँ मानि सहीजै।2।

सखि सरोष प्रिय दोष बिचारत प्रेम पीन पन छीजै।

खग मृग मीन सलभ सरसिज गति सुनि पाहनौ पसीजै ।

तुलसिदास अपराध आपनौ, नंदलाल बिनु जीजै।4।

गोपी बिरह(राग मलार-4)

ऊधो हैं बड़े, कहैं सोइ कीजै।

अलि, पहिचानि प्रेमकी परिमिति उतरू फेरि नहिं दीजै।1।

जननी जनक जरठ जाने , जन परिजन लोगु न छीजै।

दै पठयो पहिलो बिढ़तो ब्रज, सादर सिर धरि लीजै।2।

कंस मारि जदुबंस सुखी कियो, स्त्रवन सुजस सुनि जीजै।

तुलसी त्यों-त्यों होइगी गरूई, ज्यों-ज्यों कामरि भीजै।3।

कान्ह ,अलि , भए नए गुरू ग्यानी।

तुम्हरे कहत आपने समुझत बात सही उर आनी।1।

लिए अपनाइ लाइ चंदन तन, कछु कटु चाह उड़ानी।

जरी सुँधाइ कूबरी कौतुक करि जोगी बघा-जुड़ानी।2।

ब्रज बसि रास बिलास, मधुपुरी चेरी सों रति मानी।

जोग जोग ग्वालिनि बियोगिनि जान सिरोमनि जानी।3।

कहिबे कछू, कछू कहि जैहै, रहौ आलि! अरगानी।

तुलसी हाथ पराएँ प्रीतम, तुम्ह प्रिय हाथ बिकानी।4।

गोपी बिरह(राग मलार-5)

सब मिलि साहस करिय सयानी ।

ब्रज आनियहिं मनाय पायँ परि कान्ह कूबरी रानी।1।

बसैं सुबास, सुपास होहिं सब फिरि गोकुल रजधानीं।

महरि महर जीवहिं सुख जीवन खुलहिं मोद मनि खानीं।2।

तजि अभिमान अनख अपनो हित कीजिय मुनिबर बानी।

देखिबो दरस दूसरेहुँ चोथेहुँ बड़ो लाभ, लघु हानी।3।

पावक परत निषिद्ध लकारी होति अनल जग जानी ।

तुलसी सो तिहुँ भुवन गायबी नंतसुवन सनमानी।4।

कही है भली बात सब के मन मानी।

प्रिय सम प्रिय सनेह भाजन सखि प्रीति-रीति जग जानी।1।

भूषन भूति गरल परिहरि कै हर मूरति उर आनी।

मज्जन पान कियो कै सुरसरि कर्मनास जल छानी।2।

पूँछ सो प्रेम बिरोध सींग सों एहिं बिचार हित हानी।

कीजै कान्ह कूबरी सों नित नेह करम मन बानी।3।

तुलसी तजिय कुचालि आलि! अब, सुधरै सबइ नसानी।

आगें करि मधुकर मथुरा कहँ सोधिय सुदिन सयानी।4।

गोपी बिरह(राग केदारा-1) ऐसो हौंहुँ जानति भृंग।

नाहिनै काहूँ लह्यो सुख प्रीति करि इक अंग।1।

कौन भीर जो नीरदहि, जेहि लागि रटत बिहंग।

मीन जल बिनु तलफि तनु तजै , सलिल सहज असंग।2।

पीर कछू न मनिहि, जाकें बिरह बिकल भुअंग।

ब्याध बिसिख बिलोक नहिं कलगान लुबुध कुरंग।3।

स्यामघन गुनबारि छबिमनि मुरलि तान तरंग।

लग्यो मन बहु भाँति तुलसी होइ क्यों रसभंग?।4।

उधौ! प््रा्ीति करि निरमोहियन सों को न भयो दुखः दीन?।

सुनत समुझत कहत हम सब भईं अति अप्रबीन।1।

अति कंरंग पतंग कंज चकोर चातक मीन।

बैठि इन की पाँति अब सुख चहत मन मतिहीन।2।

निठुरता अरू नेह की गति कठिन परति कही न ।

दास तुलसी सोच नित निज प्रेम जानि मलीन।3।

गोपी बिरह(राग गौरी-1)

मधुप! समुझि देखहु मन माहीं।

प्रेम पियूषरूप उडुपति बिनु। कैसे हो अलि! पैयत रबि पाहीं।1।

जद्यपि तुम हित लागि कहत सुनि, स्त्रवन बचन नहिं हृदयँ समाहीं।

मिलहिं न पावक महँ तुषार कन जौ खोजत सत कल्प सिराहीं।2।

तुम कहि रहे , हमहूँ पचि हारीं, लोचन हठी तजत हठ नाहीं।

तुलसिदास सोइ जतन करहु कछु बारेक स्याम इहाँ फिरि जाहीं।3।

मोको अब नयन भए रिपु माई!

हरि-बियोग तनु तजेहिं परम सुख, ए राखहिं सो करि बरिआई।1।

बरू मन कियो बहुत हित मेरो, बारहिं बार काम दव लाई।

बरषि नीर से तबहिं बुझावहिं स्वारथ निपुन अधिक चतुराई।2।

ग्यान परसु दै मधुप पठायौ बिरह बेलि कैसेहु कटि जाई।

सो थाक्यो बरू रह्यो एकटक, देखत इन की सहज सिंचाई।3।

हारतहूँ न हारि मानत सठ सखि! सुभाव कुदुक की नाई।

चातक जलज मीनहु ते भेारे, समुझत नहिं उन की निठुराई।4।

ये हठ निरत दरस लालच बस, परे जहाँ बल बुधि न बसाई।

तुलसिदास इन्ह पै जो द्रवहिं हरि, तौ पुनि मिलहिं बैरू बिसराई।5।

भक्त-मर्यादा-रक्षण(राग आसावरी)

कहा भयो कपट जुआ जौं हौं हारी।

समर धीर महाबीर पाँच पति क्यों दैहैं मोहि होन उधारी।।

राज समाज सभासद समरथ, भीषन द्रोन धर्म धुर धारी।

अबला अनघ अनवसर अनुचित, होति, हेरि करिहैं रखवारी।2।

यों मन गुनति दुसासन दुरजन, तमक्यो तकि गहि दुहुँ कर सारी।

सकुचि गात गोवति कमठी ज्यों, हहरी हृदयँ, बिकल भइ भारी।।3।

अपनेनि को अपनो बिलोकि बल, सकल आस बिस्वास बिसारी।

हाथ उठाइ अनाथनाथ सों 'पाहि पाहि पं्रभु! पाहि' पुकारी।4।

तुलसी परखि प्रतीति प्रीति गति, आरतपाल कृपालु मुरारी।

बसन बेष राखी बिसेषि लखि बिरूदावलि मूरति नर नारी।5।

गहगह गगन दुंदुभी बाजी।

बरषि सुमन सुरगन गावत जस, हरष मगन मुनि सुजन समाजी।1।

सानुज सगन ससचिव सुजोधन, भए मुख मलिन खाइ खल खाजी।

लाज गाज उपवनि कुचाल कलि परी बजाइ कहूँ कहुँ गा◌ाजी।।2।

प्रीति प्रतीति द्रुपदत नया की, भली भूरि भय भभरि न भाजी।

कहि पारथ सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीब नेवाजी।3।

सिथिल सनेह मुदित मनहिं मन, बसन बीच बिच बधू बिराजी।

सभा सिंधु जदुपति जय जय जनु, रमा प्रगटि त्रिभुवन भरि भ्राजी।4।

जुग जुग जग साके केसव के, समन कलेस कुसाज सुसाजी।

तुलसी को न होइ सुनि कीरति, कृष्न कृपालु भगति पथ राजी।5।